रिकार्ड– ओम नमो शिवाय..... .. ओमशांति प्रातःक्लास 24.12.67
रुहानी बाप जिनकी महिमा सुनी वो बैठ बच्चों को पाठ पढ़ाते हैं। यह पाठशाला है ना। तुम सब यहां पर पाठ पढ़ रहे हो टीचर से। यह है सुप्रीम टीचर। जिसको ही परमपिता भी कहा जाता है। परमपिता तो रुहानी बाप को कहा जाता है। लौकिक बाप को कब भी परमपिता नहीं कहेंगे। अभी हम पारलौकिक बाप के पास बैठे हैं। कोई तो बैठे कोई तो मेहमान बनकर आते हैं। तुम समझते हो कि हम तो देही बाप के पास बैठे हैं वर्सा लेने लिए। तुमको अंदर में कितनी खुशी होनी चाहिए। मनुष्य तो विचार चलाते रहते हैं। इस समय दुनियां में सब कहते हैं कि दुनियां में शांति स्थापन हो। यह तो बिचारों को पता ही नहीं है कि शांति क्या वस्तु है। ज्ञान का सागर ,शांति का सागर। बाप ही शांति स्थापन करने वाला है। निराकारी दुनियां में तो शांति है ही है। चिल्लाते रहते हैं कि दुनियां में शांति स्थापन हो। अब नई दुनियां सतयुग में तो शांति ही थी। जबकि एक ही धर्म था। अब नई दुनियां सतयुग में तो शांति थी। नई दुनियां को तो कहते ही हैं पैराडाइज। देवताओं की दुनियां। शास्त्रों में तो जहां–तहां पर ही अशांति की ही बातें दिखाई हैं। दिखाते हैं कि सतयुग में कंस था। द्वापरयुग में फिर हिरण्यकश्यप को दिखाते हैं। त्रेता में रावण का हंगामा। सभी जगह पर अशांति ही दिखा दी है। मनुष्य बिचारे कितना घोर अंधेरे में हैं। पुकारते भी हैं बेहद के बाप को। जबकि गॉड फादर आवे तो ही वो आकर शांति स्थापन करे। गॉड फॉदर को तो बिचारे जानते ही नहीं हैं। शांति तो होती ही है नई दुनियां में। पुरानी दुनियां में होती नहीं है। नई दुनियां स्थापन करने वाला तो बाप ही है। उनको ही पुकारते हैं कि आकर पीस स्थापन करो। बाप कहते हैं कि पहले तो है पवित्रता। अभी तुम पवित्र बन रहे हो। वहां पर तो पवित्रता भी है तो पीस भी है। प्लैनटी भी है। हैल्थ–वैल्थ सब है। धन बिना तो मनुष्य उदास हो जाता है। तुम यहां पर आते ही हो इन ल.ना. जैसा धनवान बनने। यह तो विश्व के मालिक थे ना। तुम आये हो विश्व का मालिक बनने ;परंतु दिमाग सबका नम्बरवार है। बाबा ने कहा था कि जब प्रभातफेरी निकालते हो तो साथ में ल.ना. का चित्र जरूर उठाओ। ऐसी युक्ति रचो। अभी बच्चों की बुद्धि पारसबुद्धि बनने की है। पहले तो तमोप्रधान पत्थर बुद्धि थे। अभी तो सतो–सतोप्रधान तक जाना है। वो ताकत अभी आई नहीं है। याद में रहते नहीं हैं। योग ....की बहुत कमी है। फट से तो सतोप्रधान नहीं बन सकते हैं ना। यह जो गायन है कि सैकेंड में जीवनमुक्ति। वो तो ठीक है। तुम ब्राह्मण बने हो तो माना कि जीवनमुक्त तो बन ही गए। फिर जीवनमुक्ति में भी सर्वोत्तम,मध्यम,कनिष्ट तो होते हैं ना। जो बाप का बनते हैं तो जीवनमुक्ति मिलती तो जरूर ही है। भल बाप का बनकर फिर उनको छोड़ देते हैं। तो भी जीवनमुक्ति तो जरूर ही मिलेगी। स्वर्ग में झाड़ू लगाने वाला बन जावेंगे। स्वर्ग में तो जावेंगे ;परंतु पद कम मिलेगा। बाप अविनाशी ज्ञान रत्न देते हैं तो उनका कब भी विनाश नहीं होता है। बच्चों के अंदर में तो खुशी दुमदुबी बजनी चाहिए। यह हाय2 होने के बाद फिर वाह2 होनी है। अभी तो ईश्वरीय सन्तान हो, फिर बनोगे दैवी सन्तान। इस समय का यह तुम्हारा जीवन हीरे तुल्य है। तुम भारत की सर्विस करके भारत को पीसफुल बनाते हो। वहां पर तो पवित्रता,सुख,शांति सभी कुछ रहता है। यह जीवन तुम्हारा तो देवताओं से भी उंच है। अब तुम रचता बाप को और सृष्टि के चक्र को जानते हो। कहते हैं कि यह त्यौहार आदि जो भी है वो परम्परा से चले आते हैं ;परंतु कब से यह कोई नहीं जानते हैं। समझते हैं कि जब से सृष्टि शुरू हुई है। रावण का जलाना भी कहते हैं कि परम्परा से ही चला आता है। अब सतयुग में तो रावण होता ही नहीं है। मनुष्य तो बिल्कुल ही पत्थर बुद्धि ,बंदरबुद्धि हैं। यह सारे टाइटल तो बाप ने ही दिये हैं। काशी में बहुत बड़े2 टाइटल मिलते हैं। श्री2 108 का टाइटल भी काशी से ही मिलता है। अब शिवबाबा कहते हैं कि यह तो सारे भक्तिमार्ग के ही गपोड़े हैं। कितना शोर मचाते हैं कि विश्व में शांति हो। बाप को जानते ही नहीं हैं तो नास्तिक

ही ठहरे ना। गाते भी हैं कि परमात्मा सर्वव्यापी है। फिर भी परमात्मा को याद करते रहते हैं। समझते हैं कि गॉड ही विश्व में शांति करेंगे। तो इसीलिए कहते हैं कि आकर रहम करो। बच्चे ही बुलाते हैं बाप को ;क्योंकि बच्चों ने ही सुख देखा है ना। बाप कहते हैं कि हम तुमको प्योर बनाकर साथ ले चलेंगे। जो प्योर नहीं बनेंगे तो वो सजा ही खावेंगे ना। इसमें मंसा ,वाचा,कर्मणा पवित्र रहना है। मंसा भी बहुत अच्छी होनी चाहिए। इतनी तो मेहनत करनी है कि जो पिछाड़ी में तो मंसा में भी खयाल नहीं आवे। एक बाप के बिना कोई याद नहीं आवे। बाप समझते हैं कि अभी मंसा (तक) तो आवेगा ही जब तक कि इतनी कर्मातीत अवस्था बने। हनुमान की तरह अडोल बनो। उसके लिए तो बहुत मेहनत चाहिए। बाप खुद भी देखते हैं कि ऐसे2 तो काम करते हैं जैसे कि बर्थ नॉट अपेनी। जो आज्ञाकारी, वफादार सपूत बच्चे होते हैं। बाप का प्यार उन पर ही जास्ती रहता है। पांच विकारों में जीत ना पाने वाले इतना प्यारे नहीं लग सकते हैं। तुम बच्चे जानते हो कि हम तो कल्प2 बाप से बेहद का वर्सा लेते हैं तो कितना खुशी का पारा चढ़ना चाहिए। यह भी जानते हो कि स्थापना तो जरूर होनी ही है। यह पुरानी दुनियां जरूर कब्रदाखिल होनी है। हम परिस्तान में जाने लिए कल्प पहने मिसल पुरुषार्थ करते रहते हैं। यह तो कब्रिस्तान है ना। जैसे पुरानी देहली औन न्यू देहली कहते हैं ना। वास्तव में न्यू देहली तो नई दुनियां में होगी ही नहीं। पुरानी दुनियां में नई देहली क्या काम की?नई दुनियां तो परिस्तान था। सीढ़ी कितनी अच्छी है तो भी मनुष्य समझते ही नहीं हैं। यहां ही सागर के कण्ठे पर रहने वाले भी पूरा समझते नहीं हैं। धन होवे तो दान भी जरूर करे। धन दिये धन ना खुटे। दानी महादानी कहलाते हैं ना। जो हास्पिटल, धर्मशाला आदि बनवाते हैं उनको महादानी कहा जाता है। उसका फल फिर अल्पकाल लिए दूसरे जन्म में मिलता है। समझो कि कोई भी धर्मशाला बनवाते हैं तो दूसरे जन्म में मकान का सुव (सुख) मिलेगा। समझो कि कोई भी बहुत धन दान करते हैं तो कोई भी राजा के घर में वा साहुकार के घर में जन्म लेते हैं। वो दान देने से बनते हैं। तुम तो फिर पढ़ाई करके राजाई पद पाते हो। पढ़ाई भी है तो दान भी है। यहां पर तो है डायरैक्ट। भक्तिमार्ग में है इनडायरैक्ट। शिवबाबा तुमको पढ़ाई से ऐसा बनाते हैं। शिवबाबा के पास तो है अविनाशी ज्ञान रत्न। यह एक2 रत्न लाखों रुपयों के हैं। भक्ति के लिए नहीं कहा जाता है। भक्ति में तो नीचे ही गिरते जाते हैं। ज्ञान इसको कहा जाता है। बाकी .....तो है भक्ति का ज्ञान। भक्ति कैसे की जावे इसके लिए शिक्षा मिलती है। तुमको शंकराचार्य भी कहते हैं कि शास्त्रार्थ करेा। अब शास्त्रों में तो भक्ति की ग्लानी की है। भूसा है। उनका शास्त्रार्थ क्या बैठकर करेंगे। उनको तो भक्ति का ही कापारी नशा चढ़ा हुआ है। तुम बच्चों को है ज्ञान का कापारी नशा। रात–दिन का फर्क है। भक्ति के बाद ज्ञान मिलता है। ज्ञान से ही विश्व की बादशाही का कापारी नशा चढ़ता है। जो जास्ती सर्विस करेंगे उनको जास्ती नशा होगा। प्रदर्शनी अथवा म्यूजियम में भी अच्छा भाषण करने वालों को ही बुलाते हैं नां। यहां पर भी जरूर नम्बरवार होगा। महारथी घोड़े सवार,प्यादे तो होते ही हैं ना। दिलवाला मंदिर में भी यादगार बना हुआ है। तुम कहेंगे कि यह है चैतन दिलवाला मंदिर ,वो है जड़। वास्तव में यहां पर लिखना चाहिए सच्चा दिलवाला मंदिर। तो वो झूठा खुद ही सिद्ध हो जावेगा ; परंतु तुम लिखेंगे तो झगड़ा कर देंगे। यह है ही झूठी दुनियां। जैसे अंग्रेजी भाषा के बिरखिलाफ है। वैसे ही सच्च के भी बरखिलाफ है। विनाश कोले विपरीत बुद्धि तो है ही ना। तुम तो हो गुप्त। इसलिए ही तुमको तो जानते ही नहीं हैं। तुमसे तो लड़ते हैं। तुम हो राजऋषि। वो हैं हठयोग ऋषि। अभी ज्ञानज्ञानेश्वरी हो। ज्ञान सागर तुमको ज्ञान देते हैं। शास्त्रों में दिखाया है कि शंकर–पार्वती पर फिदा हुआ। फिर बिच्छु–टिंडन पैदा हुए। गरुड़ पुराण में विषय सागर में बिच्छु–टिंडन दिखाते हैं। वो इस समय की ही बात है। आधा कल्प तो है ही रावण का राज्य। भक्तिमार्ग माना ही दुर्गति मार्ग। तुम भी कितना समझाते हो। कहते भी हैं कि हां, हम

आवेंगे। फिर भी गुम हो जाते हैं। कहेंगे कि ज्ञान तो बहुत अच्छा है। मनुष्यों को समझना चाहिए। खुद नहीं समझेंगे। नब्ज देखने की बहुत युक्तियां चाहिए। तुम तो अविनाशी सर्जन के बच्चे हो। सर्जन ही तो नब्ज देखेंगे ना। जो अपनी नब्ज को ही नहीं जानते हैं तो वो फिर दूसरों की ....कैसे जानेंगे?तुम तो अविनाशी सर्जन के बच्चे हो ना। ज्ञान अंजन सतगुरू दिया..... .....यह ज्ञान इंजेक्शन है ना। आत्मा को ज्ञान का इंजेक्शन लगता है। यह महिमा भी अभी की ही है। सतगुरू की ही महिमा है। गुरुओं को भी ज्ञान इंजेक्शन तो सतगुरू ही देंगे ना। तुम भी अविनाशी सर्जन के बच्चे हो तो तुम्हारा भी काम है इंजेक्शन लगाना। डॉक्टर्स में भी कोई तो मास में लाख भी कमाते हैं। कोई तो मुश्किल से 500 ही कमावेंगे। तो हजाम ही तो ठहरे ना। हाइकोर्ट में जजमेंट मिलती है कि फांसी पर चढ़ना है। फिर प्रेजिडेंट पास जाते हैं। वो माफ कर देते हैं। फिर जज लोग इसको भी ठीक नहीं समझते हैं। जेल में डाल ही देते हैं। तो हजाम ठहरे ना। यह तो दुनियां ही है बर्थ नॉट अपेनियों की। तो बच्चों को कितना नशा रहना चाहिए। उदारचित्त होना चाहिए। इस भागीरथ में बाप ने प्रवेश किया तो उनको उदारचित्त बनाया गया ना। खुद तो कुछ भी कर सकते हैं ना। वो इसमें आकर मालिक बनकर बैठे हो। चलो, यह सब भारत माताओं के कल्याण के लिए लगाना है। तुम भी धन लगाते हो तो भारत के ही कल्याण लिए ना। कोई पूछते हैं कि खर्चा कहां से लाते हो? बोलो कि हम तो अपने ही तन–मन–धन से सर्विस करते हैं। हम राज्य करेंगे तो पैसे भी तो हमी ही लगावेंगे ना। हम अपना ही खर्चा चलाते हैं। हम ब्राह्मण श्रीमत पर राज्य स्थापन करते रहते हैं। जो ब्राह्मण बनेंगे वो ही खर्चा करेंगे। शूद्र से ब्राह्मण तो बने फिर देवता भी बनना ही है। विराट रूप का चित्र बाबा के पास है ही नहीं। बाबा से तो कोई भी मांगते हैं तो झट दे देते हैं। तो सेंसिबुल बच्चों का तो काम है झट बाबा पास चित्र भेज देना ;परंतु इतनी विशाल बुद्धि कहां से लावें? बाबा तो कहते रहते हैं कि सभी चित्र ऐसे ही ट्रांसलाइट के बनाओ तो जो कि मनुष्यों को खैंच होता रहे। कोई को झट तीर लग जावेगा। कोई तो फिर जादू के डर से आवेंगे ही नहीं। मनुष्य से देवता बनना यह तो एक जादू ही है ना। बाप .....बनाते हैं। भगवानोवाच्य है कि मैं तुमको राजयोग सिखाता हूं। हठयोगी तो राजयोग सिखा ही नहीं सकते हैं। वो तो है हठयोगी हद के सन्यासी। तुम तो राजयोगी बेहद के सन्यासी हो। यह बातें भी अभी तुम्हीं समझते हो। तुम मंदिर में जाने लायक बन रहे हो। तुम फील करते हो कि हम तो बंदर ही थे। हमारी ही सेना लेकर फिर बाप ज्ञान देकर विश्व पर जीत पहनाते हैं। यह सारा विश्व ही बेहद की लंका है। इस समय रावण का राज्य तो सारे विश्व में ही है। बाकी सत–त्रेता में तो यह रावण आदि हो ही कैसे सकते हैं? यह सब तो भक्तिमार्ग के शास्त्रों का भूसा है। जिससे ही मनुष्य भूसा बुद्धि बन जाते हैं। बाप कहते हैं कि यह भक्ति का भूसा सभी निकालो। अभी तो मैं जो कहूं वो ही सुनो। इन आंखों से भी और कुछ देखो नहीं। यह पुरानी दुनियां ही विनाश होनी है। इसलिए ही हम अपने शांतिधाम–सुखधाम को ही याद करते हैं। अब तुम समझते हो कि हम पुजारी से पूज्य बन रहे हैं। यही नम्बरवन पुजारी था। नारायण की तो बहुत ही पूजा करते थे। अब फिर यही पूज्य नारायण बन रहे हैं। तुम भी पुरुषार्थ करके बन सकते हो। राजधानी तो चलती ही है ना। जैसे किंग एडवर्ड दी फर्स्ट ,सेकिंड.....। चलते तो हैं ना। उनका और तुम्हारा कनेक्शन है। जितना धन ले गए हैं वो फिर सब वापस कर रहे हैं। इतनी तुमको मदद करते हैं तो उनका उपकार करना चाहिए ना। यह तो और ही उनका अपकार करते हैं। भाषा भी तो उनकी का तिरस्कार करते हैं ना। बाप कहते हैं कि हमारा अपकार करते आये हो, ठिक्कर–भित्तर में कहते आये हो , फिर भी हम तो तुम्हारा उपकार ही करते हैं। कितनी मुझको गालियां देते हो। यह खेल ही ऐसा वंडरफुल बना हुआ है। पुरुषार्थ जरूर करना ही है। कल्प पहले

भी जो पुरुषार्थ किया है वो ही ड्रामा जरूर करवायेगा। जितना जो करेंगे उतना ही पद पावेंगे। पहले2 तो समझना चाहिए कि भगवान हमको पढ़ाते हैं। कल तो...रचता और रचना की आदि,मध्य,अंत को नहीं जानते थे। आज जानते हैं। तो हम तो शंकराचार्य आदि से उंच ठहरे ना। वो ना तो रचता को ना ही रचना को जानते हैं। फिर श्री2 कौन ठहरे? शंकराचार्य वा तुम? परंतु तुम तो हो ही गुप्त। तुम तो हो ही अननोन वारियर्स। अननोन कोई भी और होता नहीं है। गवर्मेंट के पास तो सभी के नाम आदि रहते हैं ;परंतु यह तो तुम्हारा ही गायन है। तो वो भी तुम्हारी ही कापी कर लेते हैं। यह कोई भी जानते थोड़े ही कि तुम विश्व का मालिक बनने वाले हो। इसलिए ही बाबा कहते रहते हैं कि ल.ना. का चित्र परिक्रमा में तो जरूर निकालो। हम यह राज्य स्थापन कर रहे हैं। उसमें ही पवित्रता,शांति सब ही कुछ है। अपवित्र को तो विश्व की बादशाही ....ही नहीं मिलती है। बाकी प्रजा पद मिलेगा। बाबा ने समझाया है कि काम की तो है नम्बरवन हिंसा। क्रोध भी हिंसा है। किसी को गाली देनी वा दुःखी करना यह भी तो हल्की हिंसा ही है ना। मारना तो बड़ी हिंसा है। कब क्रोध आदि भी नहीं करना चाहिए। कहेंगे कि इनमें तो भूत है। क्रोध का भूत। देहअभिमान का भूत। ...ही बाप बार2 कहते हैं कि आत्माभिमानी बनो।

22.12.67 रात्री क्लास– सर्विस से बहुतों का कल्याण करना है। कोई2 को तो सर्विस का बहुत शौक रहता है तो गर्मी–सर्दी। आदि को भी नहीं देखते हैं। बाप को तो वंडर भी लगता है कि कल्प पहले मुआफिक बच्चों को कितना सहज ज्ञान मिल रहा है। यह जो विराट स्वरूप का चित्र है कि हम ब्राह्मण हैं फिर देवता बनते हैं ,यह भी सिद्ध करके बताना होता है। ब्राह्मण के पीछे हैं देवतायें। सिद्ध करके बताना है कि ब्राह्मण तो पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही होते हैं। शूद्र से ब्राह्मण बना माना ही ब्राह्मण कुल का बने। ईश्वर के बच्चे ब्राह्मण–ब्राह्मणियां। ईश्वर के बच्चों को देवता नहीं कहेंगे। तुम बच्चे भी हो तो पोत्रे भी हो। ब्राह्मण कुल ही सर्वोत्तम कुल है। यह भी समझाना पड़ता है कि हम ब्राह्मण ईश्वर कुल के हैं। प्रजापिता ब्रह्मा का बाप शिवबाबा ठहरा। जो ही ब्रह्मा बनते हैं वो ही विष्णु बनते हैं। शंकर का तो पार्ट ही नहीं है। देवतायें तो हिंसक नहीं होते हैं ना। बहुत सारी प्वाइंट्स हैं। नोट नहीं करने से भूल जाती है। बाप को सर्विस का फुरना रहता है कि पतितों को पावन बनाउं। इनको तो फिर अपनी राजधानी का नशा है कि हम सांवरे से गोरा बनूंगा। विनाश सामने खड़ा है ना। खुशी तो तुम बच्चों को भी रहनी चाहिए। कहते भी हो कि हम तो आये ही हैं नर से नारायण बनने। फेल होते हैं तो जाकर प्रजा बनते हैं। यह जो रुहानी गॉड फादर की यूनिवर्सिटी है। तुमको रूह ही पढ़ाती है। दूसरा तो कोई पढ़ा ही नहीं सकता है। बादशाही मिलती है तो कम बात है क्या? परंतु पावन तो बनते ही नहीं हैं। तकदीर में ही नहीं हैं तो तदबीर भी क्या कर सकती है? बाप खुद ही कहते हैं कि काम चिक्षा पर नहीं चढ़ो, जल मरोगे। बचाने वाला आया ही है तो उनकी तो मत पर चलो। नहीं तो पूरी ही आग लग जावेगी। तकदीर में ही नहीं है तो उनकी बुद्धि में ज्ञान बैठता ही नहीं है। फेल होते हैं तो फिर चंद्रवंशी में आ जाते हैं। राम के राज्य में भी आते हैं ना। कम पास तो राम के राज्य में भी पिछाड़ी में जाकर राजा बने तो उनका क्या फायदा हुआ? सच्च2 सुख तो नहीं देख सकते हैं ना। योग का ज्वर भरता नहीं है। बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझो ,बहुत प्यार से चलो ;परंतु ज्ञान नहीं होने के कारण प्यार नहीं रहता है। बाप आते हैं स्वर्ग की बादशाही स्थापन करने। बादशाही थी ना। भारतवासी लाखों वर्ष कह देते हैं। तो सब कुछ भूल गए हैं। कभी2 समाचार आते हैं बच्चे गिर जाते हैं तो .....पड़ता है अरे, काम चिक्षा पर बैठकर जल मरे हो। फिर सौणा दण्ड लग जाता है। वो उंच पद नहीं पाते हैं ;क्योंकि बाप की निंदा करवाते हैं। समझते हैं कि बाबा देखता थोड़े ही है। वो तो बाप भी कहते हैं कि मुझे क्या पड़ी है देखने की। जो जैसा ही करेगा वैसा ही पावेगा। अच्छा, बच्चों को नमस्ते ,गुडनाइट।